64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ
തിയ്യതി........................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

निबंध : नारियाँ - नौकरी क्षेत्रों में।

रूपरेखा :
- प्रस्तावना
- भारतीय समाज और नारी
- आधुनिक युग में नारी
- पितृसत्तात्मकता और नारी
- विद्या और नारी
- नारी विभिन्न क्षेत्रों में
- उपसंहार

प्रस्तावना :

वर्तमान समाज में, ऐसे कई चीजें नज़र आता है जिन्हें गंभीर तरह से परिवर्तन हुआ है। उनमें से एक है स्त्री एवं नारी समाज की विकास। विश्व में, अगर एक देश प्रगती प्राप्त करना चाहता है तो, उस देश की सभी लोगों विद्या प्राप्त करना चाहिए। लेकिन, आज भी ऐसे कई देश है जहा नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा है। परिणाम

वह देश कभी प्रगतिशील नही बनता। आज के नारी समाज हर क्षेत्र में अपना पहचान बना दिया है। विज्ञान, तकनीक, गणीत, आदी क्षेत्रों में नारी अपनी क्षमता को दर्शाते आ रहा है। पर आज भी, इन्हे कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

भारतीय समाज और नारी :

भारतीय संस्कृति में नारी को देवी, माँ, बहन, पत्नी जैसे अहम एवं महत्वपूर्ण स्थान और सम्मान दिया है। परंतु, प्राचीन युग में स्त्री को पुरुष से निम्न स्थान दिया जाता था। विद्या प्राप्त करने की इजाज़त उन्हें नही मिलती थी। बस, चार दिवारों में उनका ज़िंदगी खत्म हो जाती थी। भारतीय इतिहास अनेक विद्रोही का गवाह है जैसे रानी लक्ष्मि बाई, सुचेता कृपलानी, अरुंधती रॉई आदी। एक नारी के बिना विश्व में ज्ञान एवं जीवन सफल नहीं होता। पर, आज भी कई इलाकों में लोग रूढ़िवादित रहते है। कभी-कभी, स्त्री को अनेक तरह का अपमानना का सामना करना पड़ता है। कार्यालय में, अगर एक नारी पुरुष से ज्यादा काम कर भी रहे, तो भी उन्हें वेतन कम मिल जाता है।

इसका कारण यह है की स्त्री को हमारे समाज में पुरुष से निम्न स्थान दिया है। यह गलत बात है। नारी की क्षमताओं को कभी चार दिवारी तक सीमित नहीं करनी चाहिए। प्राचीन युग में, नारी हमेशा चुप रहती थी। और जिन्होंने आवाज़ उठाया, उनको कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा।

आधुनिक युग में नारी :-

आधुनिक समाज की नारी, हमेशा अपने लिए आवाज उठाती है। उन्हें यह बात पता है की चुप रहने से बात और बिगड़ जाता है। आधुनिक नारी स्वावलंबी रहने की कोशिश करनेवाली है। स्त्री सशक्तीकरण आधुनिक महिला का आदर्श है। आज नारियां, सिनेमा, तकनीक, सूचना प्रौद्योगिकी, गणीत, विज्ञान जैसे हर क्षेत्र में अपना क्षमता को दर्शाया है। आधुनिक नारी सीमित नहीं है। स्त्री का रोज़गार रहना, एक देश का अर्थव्यवस्था केलिए अत्यंत उत्तम है। स्त्री केवल एक जीवन देने वाली या अपने पीढ़ी को आगे बढ़ाने वाली एक माध्यम नहीं है। बल्कि वह खुद एक जान है, एक प्राणी

है जिन्हें अपना एक पहचान, सम्मान, आदर्श आदी का हक है। जिन देशों में स्त्री को स्त्री की तरह माना है, वहा स्त्री सुरक्षित और आत्मनिर्भर है। पर जिन देश में स्त्री को देवी समान महत्व दिया है, वहाँ स्त्री को अनेक समस्याओं और ना-इनसाफी का सामना करना पड़ रहा है। यह बड़ी अजीब बात है।

पितृसत्तात्मकता और नारी

यद्यपि नारी समाज ने अनेक प्रगति प्राप्त किया है, तो भी आज उन्हें एक गंभीर समस्या का सामना करना पड़ता है। वह है 'पितृसत्तात्मकता'। यह एक आदर्श है जहा स्त्री को पुरुष से निम्न स्थान देता है। सती जैसे कार्यक्रम, जो हमारी भारतीय समाज में प्रचलित थे, पितृसत्तात्मकता का नतीजा है। पुरुष जात हमेशा खुदको स्त्री से ऊपर मानता है। एक शादी में, जहा दो लोगों को सहयोग की जरूरत है, पुरुष और समाज हमेशा औरत को ही समझौते करने के लिए मजबूर कर देता है। स्त्री का नौकरी करना और कमाना पाप माना जाता है। यह सच बात है की

स्त्री ही पुरूष को उनके नीचे समझने का मौका देते है। आज के समाज में जब नारी आसमान छू रही है, वहाँ ऐसे व्यर्थ चीजों का कोई मोल नहीं है। समाज को इस बात का जागरूक करना नारी की कल्याण के लिय अती अवश्यक है। पुरूष का हीन भावना इसका वजह है।

विद्या और नारी :-

विद्या एवं शिक्षा ही नारी विकाश का बुनियाद हिस्सा है। शिक्षा के बिना मनुष्य का कोइ मोल नही है। एक शिक्षित पुरूष अपने लिए और अपनी जिंदगी को रोशन कर देता है जब की एक शिक्षित नारी आने वाली पीढी को भी रोशन कर देता है। भारत में 'बेटी बचाओ बेटी पढाओ' योजना ने स्त्री की जिंदगी में बदलाव लाया है। विद्या के बिना मनुष्य अधूरा है। विद्या एक इंसान को अपने आप के बारे में सिखाता है और अपना एक पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षित स्त्री अपने क्षमता को विश्व के सामने दर्शाता है।

शिक्षित नारी, सशक्त नारी

नारी विभिन्न क्षेत्रों में :-

भारतीय स्वतंत्रता क्रांति में स्त्री अत्यंत महत्वपूर्ण है। अगर स्त्री नहीं होती, तो शायद स्वतंत्रता पाना मुश्किल हो जाता। 2025 को विश्व शतरंज रूप में, एक भारतीय नारी जीता है। दिव्य देशमुख इस उपलब्धी पाने का सबसे छोटी नारी है। सूचना प्रौद्योगिकि में नारी तेज़ भाग रही है। विज्ञान की क्षेत्र में स्त्री ने बहुत सारी उपलब्धियाँ प्राप्त कर चुकी है। एक नारी का अपना कमाई होने का मतलब है की वह नारी स्वावलंबी है। किसी से निर्भर रहना अच्छी बात नहीं है। नारी हर क्षेत्र में उन्नतियाँ प्राप्त कर रही है और आगे भी करेंगें। नारी की कल्याण केलिए हमें वह सब कुछ करना है जो मुमकिन है। हर नवाचार के पीछे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक नारी का हाथ ज़रूर होता है। कभी माँ की रूप में, कभी बेटी, कभी बहन आदी की रूप में वह सबका जिंदगी में एक वर्दान बन

जाती है। कठिन समस्याओं का सामना करके ही स्त्री विश्व में अपना पहचान बनाया है। हर क्षेत्र में वो अपनी क्षमता को प्रकट किया है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें नारी की हाथ ना हो। वर्तमान काल में स्त्री का मोल बढ़ गया है।

हालात बदली,
सोच बदली!

उपसंहार :

अंत: में, यह कहना उचित होगा की हर प्रगति और विकास के पीछे किसी न किसी तरह एक नारी का हाथ होता है। पहले, स्त्री को नौकरी करना मना था और अपशगुन माना जाता था। जब से स्त्री खुदको उन पुरानी सोचों से मोचित किया, तबसे स्त्री एवं महिला प्रगति हासिल करना शुरू किया है। हर इंसान को कमाने का हक है। उसे निषेध करना पाप है। खुद की कमाई हो तो किसी से निर्भर रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। स्त्री की कल्याण केलिए लड़ना और उनके लिए आवाज़ उठाना हमारा दायित्व है। ऐसी योजनाओं

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ തൃശ്ശൂർ

आविष्कार करना जहाँ स्त्री की भला है। उनको नौकरी की क्षेत्र में अवसर देना, उनका साथ देना चाहिए। उनके साथ कोई भेदभाव का मनोभाव रखना अच्छी बात नहीं है। स्त्री हर देश का नींव और रीढ़ है। उनकी कल्याण मतलब देश की कल्याण। उनको देवी की तरह ~~मानने~~ मानने के बजाय इंसान मानो। उन्हें उनको सुरक्षा ~~प्रधान करो और शिक्षा~~ ~~प्रधान करो~~ और शिक्षा प्रदान करो।

बेटी की खुशी,
देश की खुशी।